द ग्लोबल टाइम्स

सितम्बर 15, 2025

सोशल मीडिया और हम

इसका अधिक प्रयोग मानसिक विकास में बाधक

आराधना शुक्ला
ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल
जगदीशपुर, कक्षा 9 बी

सोशल मीडिया इंटरनेट-आधारित संचार का माध्यम है। इसका उपयोग हम आपसी विचारों और सूचनाओं को साझा करने के लिए करते हैं। यह ऐसा प्लेटफॉर्म है जहाँ लोग फेसबुक, स्नैपचैट के जरिए एक-दूसरे से जुड़ते है। हम सोशल मीडिया के माध्यम से दूसरे व्यक्ति से किसी भी समय और कहीं भी सम्पर्क कर सकते हैं। अब यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। यह हमें खुद को कहीं भी आभासी रूप में प्रस्तुत करने, अपने व्यक्तिगत ब्रांड बनाने या ग्राहकों से जुड़ने और भी बहुत कुछ करने का माध्यम प्रदान करता है। सोशल मीडिया फायदेमंद भी है और नुकसानदेह भी। हम विद्यार्थी इसका सबसे ज्यादा फायदा उठाते है- अपने प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए। इसे हम अपनी सभी समस्याओं की समाधान-कुंजी के रूप में अपने साथ पाते हैं। दैनिक जीवन के सभी पहलुओं से लेकर अंतरिक्ष भेदने तक, सागर की अथाह गहराइयों से लेकर पर्वत की चोटियों तक, हर जगह हम सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं। यात्राओं में गूगल मैप्स हमारी बहुत मदद करता है इत्यादि-इत्यादि।

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। सोशल मीडिया

रूपी सिक्के के भी दो पहलू हैं। एक ओर जहाँ इसके फायदे हैं तो दूसरी ओर नुकसान भी हैं। जैसे- बच्चे अपना उत्तर गूगल से देख तो लेते हैं, पर ऐसा लगातार करने से उनका मानसिक विकास रुक जाता है। यदि गूगल मैप्स की बात करें तो कई बार गूगल मैप्स हमें गलत जानकारी भी दे देता है। यदि रास्ते में कोई समस्या है या फिर सड़क टूटी हो तो यह जानकारी गूगल हमें नहीं देता। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग का दुष्प्रभाव हमारी मानसिक और बौद्धिक क्षमता, चिंतन व कल्पना शक्ति पर भी पड़ता है।

हम सभी को सोशल मीडिया की ऐसी लत लगी है कि हमारे दिन की शुरूआत, सुबह उठते ही फेसबुक पर स्टोरी डालना या स्टेटस पर फोटो डालने से होती है। सोशल मीडिया पर लोग अपना अनमोल समय इस कदर बर्बाद कर रहे हैं कि उनके पास अपनों को देने के लिए समय नहीं। क्या बच्चे, क्या बूढ़े, मल्टीनेशनल कंपनियों से लेकर रेहड़ी चलाने वालों तक, कोई इससे अछूता नहीं। आजकल तो छोटे-छोटे बच्चे भी सोशल मीडिया से गलत-गलत चीजें सीख रहे हैं। नैतिक मूल्यों का पतन प्रगति पर है। यह सब हमें दृढ़ता से रोकना होगा अन्यथा वे यूँ ही गलत मार्ग पर चलते रहेंगे। बच्चों का मन गलत मार्ग पर जल्दी आकर्षित होता है क्योंकि सच्चाई का मार्ग बहुत दुर्लभ होता है। जिस पर सभी नहीं चल पाते है। हमें ही सोशल मीडिया के प्रति लोगों को जागरूक करना पड़ेगा। क्योंकि अब वह समय आ चुका है कि अब हम देश का भविष्य उज्ज्वल करें। तो उठो, जागो और कहो- सोशल मीडिया से जुड़िए पर उसमें खो मत जाइए जी टी

हिन्दी की महत्ता

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमने हिन्दी दिवस मनाया और आपके मनपसंद बाल समाचार पत्र *दी ग्लोबल टाइम्स* के माध्यम से मुझे हमारे ऐमिटी के बच्चों के हिन्दी ज्ञान का बोध हुआ। बहुत गर्व हुआ बच्चों के लेख पढ़ कर और हिन्दी लेखन में उनकी प्रवीणता देखकर। आज अँग्रेजी एवं अन्य भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है किन्तु उससे भी ज्यादा आवश्यक है भारत की भाषाओं, विशेषत: हिन्दी का ज्ञान। हिन्दी हमारी राजभाषा ही नहीं, अपितु हमारी पहचान भी है। जहाँ एक ओर समस्त राजकीय कार्य हिन्दी में होते हैं वहीं दूसरी ओर हमारे आम जीवन और विद्यालयों में हिन्दी और संस्कृत उतनी लोकप्रिय नहीं है। इसका कारण हम सबकी हिन्दी बोलने और समझने वाले को हीन भाव से देखने वाली मानसिकता है। हमें अपनी भाषा को बचाने के लिए एक सामाजिक और शैक्षणिक आंदोलन की आवश्यकता है। हमारे विद्यालय ही इस सामाजिक बदलाव के प्रमुख केंद्र हैं क्योंकि आज की कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चे भविष्य में हमारी संस्कृति और परम्पराओं के वाहक हैं। वर्तमान पीढ़ी की अच्छी बात है कि वह सीखने और प्रयोग करने को आतुर रहती है। शायद यही कारण है कि इंस्टाग्राम और यू-ट्यूब पर काफी ऐसे चैनल्स हैं जो हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा साहित्य को समर्पित हैं और इन्हें चलाने वाले स्कूल और कॉलेज के किशोर हैं। अभी हाल ही में आयोजित हुए विश्व पुस्तक मेले में एक बहुत बड़ा मंडप हिन्दी अवं क्षेत्रीय साहित्य को समर्पित था जिसमें बहुत सारे युवा और नई पीढ़ी के लेखकों की पुस्तकें देखने को मिलीं। इनमें से कई लेखक स्कूली बच्चे थे। नई पीढ़ी अपनी भाषा और परम्पराओं को निभाने के लिए आतुर और तत्पर है, बस उन्हें सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है। उन्हें विद्यालयों में हिन्दी बोलने पर सजा या रोक न हो अपितु हिन्दी, अँग्रेजी व क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान एक ही समय पर कराया जाए। ऐमिटी में हम सुभाषिका, हिन्दी नाट्योत्सव, श्लोक गायन, हिन्दी वाद-विवाद, इत्यादि कार्यक्रमों द्वारा अथाह प्रयास करते हैं कि ऐमिटी के विद्यार्थियों में हिन्दी के प्रति प्रेम जागृत करें। हमारे ऐमिटी में कई विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर की हिन्दी लेखन, हिन्दी वाद विवाद, संस्कृत श्लोक गायन इत्यादि प्रतियोगिताओं में परचम लहराया है। यह हिन्दी विशेषाँक उनके हिन्दी प्रेम एवं भाषा-प्रवीणता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

डॉ. (श्रीमती) अमिता चौहान
चेयरपर्सन
ऐमिटी ग्रुप ऑफ स्कूल्स

वैश्वीकरण के युग में जब कार्यक्षेत्र देशों की सीमाओं से सीमित नहीं रह गए हैं ऐसे में और भी आवश्यक है कि हमारी आने वाली पीढ़ी को अपनी हर उस पहचान पर गर्व हो जो उसे अपने देश अपनी माटी से जोड़ता हो, और भाषा एक महत्वपूर्ण स्रोत है अपनी जड़ों से जुड़ने और देश की छवि को विश्व-पटल पर सशक्त करने के लिए।

एआईः नियंत्रित उपयोग जरूरी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकी जगत की क्रांतिकारी खोज

अवनी अग्रवाल, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल
वसुंधरा सेक्टर 6, कक्षा 7 बी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस- एआई) तकनीकी जगत की क्रांतिकारी खोज है। इसने मानव जीवन की दिशा और दशा को बदल दिया है। यह ऐसी प्रणाली है, जिसमें मशीनों को ऐसे प्रशिक्षित किया जाता है कि वे इनसानों की तरह सोच-समझ सकें, निर्णय ले सकें और समस्याओं का समाधान कर सकें। आज *एआई* का उपयोग केवल उद्योगों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन, कृषि, रक्षा और घरेलू जीवन तक फैल चुका है। स्वास्थ्य सेवाओं में एआई आधारित रोबोटिक सर्जरी, बीमारी का पूर्वानुमान, रोगी की निगरानी जैसी सुविधाएं चिकित्सा क्षेत्र को नई ऊँचाइयों तक ले गई हैं। शिक्षा क्षेत्र में *एआई* द्वारा व्यक्तिगत अध्ययन की योजनाएँ बनाई जा रही हैं जिससे छात्रों को उनकी गति और समझ के अनुसार पढ़ने का अवसर मिल रहा है। *एआई* ने व्यापारिक जगत में भी क्रांति ला दी है। ग्राहक सेवा में चैटबॉट्स, बिक्री पूर्वानुमान, ऑटोमेशन और डेटा विश्लेषण जैसे कार्य *एआई* की मदद से तीव्र और प्रभावी रूप से हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त, यातायात व्यवस्था में ट्रैफिक मैनेजमेंट, सेल्फ-ड्राइविंग वाहन और सुरक्षा कैमरों में फेस रिकग्निशन तकनीक जैसी

सुविधाएँ *एआई* प्रभाव को दर्शाती हैं।

जहाँ *एआई* ने अनेक क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन किए हैं, वहीं इसके कुछ दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। सबसे बड़ी चिंता रोजगार की है। ऑटोमेशन के कारण कई पारंपरिक नौकरियाँ खतरे में हैं। विशेषत: वे कार्य जो दोहराव वाले या कम कौशल वाले हैं। *एआई* से निजता (प्राइवेसी) और डेटा सुरक्षा जैसे गंभीर मुद्दे भी उत्पन्न हो रहे हैं। *एआई* का भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी शक्ति है जो यदि नियंत्रित और नैतिक रूप से उपयोग की जाए तो मानव समाज को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकती है। इसके संभावित खतरे भी हैं, परंतु सावधानीपूर्वक नियमन और सही दिशा में विकास से एआई मानव जीवन के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकती है। जी टी

नई पीढ़ी के साथ बदलती संस्कृति

आद्या गोस्वामी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, वसुंधरा सेक्टर 6, कक्षा 9 सी

क्या हमारी संस्कृति और परंपराएँ अगली पीढ़ी के साथ बदल रही हैं? यदि ऐसा तो उसे बचाए रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए? हमारी संस्कृति हमारे इतिहास, परंपराओं और मूल्यों का अद्भुत मिश्रण है। भारतीय संस्कृति में धर्म, भाषा, संगीत, रीति-रिवाज और कई अन्य पहलू शामिल हैं। नई पीढ़ी के साथ हमारी मूल संस्कृति बदल रही है। कुछ लोग अपनी संस्कृति को भूल भी रहे हैं। इसके कई कारण हैं। जैसे, वैश्वीकरण, तकनीकी का प्रभुत्व और पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव। अपनी संस्कृति को बनाए रखने के लिए हमें अपनी परंपराओं और मूल्यों को अगली पीढ़ी तक सुरक्षित रखने के लिए काम करना चाहिए। हमें अपनी भाषा, खेल, संगीत और रीति-रिवाजों को भी संरक्षित करने के लिए काम करना चाहिए। अंत में, हमारी हिन्दी संस्कृति हमारे इतिहास और परंपराओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हमें इसे संरक्षित करने के लिए काम करना चाहिए और अपनी अगली पीढ़ी को भी इसे संरक्षित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

संघर्षः एक चुनौती, एक अवसर

कैरावी बुद्धिराजा, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल
मयूर विहार, कक्षा 8 बी

जहाँ संघर्ष है, वहीं जीवन का सार है,
हर कठिनाई के पार, सफलता का द्वार है।

संघर्ष जीवन की वह परीक्षा है, जो हमें निखारता है और हमारे भीतर छुपी शक्ति को जगाता है। यह हमें सिखाता है कि असफलता केवल एक सीख है, न कि अंत। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के चंद्रयान-3 मिशन की सफलता इसका उदाहरण है। चंद्रयान-2 की असफलता के बाद वैज्ञानिकों ने मेहनत की और भारत को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचने वाला पहला देश बना दिया। यह बताता है कि हार के बाद भी प्रयास करना कितना आवश्यक है। आईएएस अधिकारी आरती डोगरा का जीवन भी संघर्ष का प्रतीक है। शारीरिक चुनौतियों के बावजूद, उन्होंने

समाज की सेवा में अपना स्थान बनाया और साबित किया कि संकल्प से हर बाधा को पार किया जा सकता है। सीमित संसाधनों और चुनौतियों के बावजूद, उन्होंने दुनिया के सामने भारत का परचम लहराया। अत: संघर्ष हमें सिखाता है कि जीवन में मुश्किलें केवल हमारे साहस और संकल्प को परखने के लिए आती हैं। यह हमें गिरने के बाद उठना और आगे बढ़ना सिखाता है।

संघर्ष की लहरें ही हमें पार लगाती हैं,
हर कठिनाई जीत का बीज बो जाती है। जी टी